मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उदय

(Rise of Muslim Communalism)

1

अंग्रेजों के आगमन के समय उत्तर भारत में मुसलमानों का साम्राज्य था। अंग्रेजों का
राज्य स्थापित हो जाने के कारण मुसलमानों के सम्मान तथा गौरव को धक्का लगा।
आरम्भ में अंग्रेजों की नीति मुसलमानों को कुचलने की थी। चौथी विचारधारा सम्प्रदाय
वाद का प्रभाव सम्पूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन पर पाया जाता है। मुस्लिम सम्प्रदाय का उदय
राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारंभिक चरण में हुआ। धीरे-धीरे यह मजबूत और विकसित
होता गया और भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में इसने महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया।
स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग में यह बहुत बड़ा बाधक हुआ तथा इसका अंतिम परिणाम
देश के विभाजन के रूप में हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रथम चरण में उत्पन्न
मुस्लिम साम्प्रदायिकता भारतीय राजनीति के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई, इसने
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा पहुँचाई तथा देश के सीने में
ऐसा गहरा घाव किया जिसका इलाज सदियों तक संभव नहीं है।

ब्रिटिश जाति के भारत में आने से पूर्व देश के शासन में मुसलमानों
की अति महत्वपूर्ण प्रधानता की स्थिति थी। उनकी स्थिति को अंग्रेजों ने सहन करना
शुरु किया। अंग्रेजों को भारत से निकाल बाहर करने के लिए 1857 ई० की क्रांति में
मुसलमानों ने प्रमुख रूप से भाग लिया। अंग्रेजों ने मुसलमानों को शत्रु तथा हिन्दुओं
को वफादार समझा, उन्होंने मुसलमानों को आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण से
कुचलना शुरु किया। मुसलमानों में निर्धनता व्यापक रूप में फैल गई तथा उनकी
स्थिति हीन होती गई। लेकिन बढ़ते हुए राष्ट्रीय जागृति तथा हिन्दुओं के राजद्रोह के
चलते अंग्रेजों ने बहुत जल्द महसूस किया कि उन्हें मुसलमानों को वफादार बनाने की
चेष्टा करनी चाहिए। कई अंग्रेज शासकों ने ब्रिटिश सरकार से इस बात की
सिफारिश की। ब्रिटिश सरकार ने भी 'फूट डालो और शासन करो' की नीति का
पालन करना कूटनीतिक समझा। सर सैय्यद अहमद खाँ तथा अलीगढ़ कॉलेज के प्रिंसिपल
ने अंग्रेजों द्वारा हिन्दुओं - मुसलमानों के बीच भिन्नता करने का काम मुख्य रूप से
किया। अलीगढ़ कॉलेज की स्थापना तथा मुस्लिम लीग की स्थापना के रूप में मुस्लिम
साम्प्रदायिकता की प्रथम अभिव्यक्ति हुई। 1906 ई० में मुस्लिम शिष्टमंडल ने
पृथक निर्वाचन प्रथा की तथा मुसलमानों के लिए अन्य राजनैतिक अधिकारों की
माँग की। इस प्रकार 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में मुस्लिम साम्प्रदायिकता
ने सिर उठाना शुरु कर दिया तथा ब्रिटिश सरकार ने भी मुसलमानों को पूरा
प्रश्रय दिया जिसके कारण उसका मनोबल काफी बढ़ गया और अंत में देश
का विभाजन कराने में सफल हुआ।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

भारत में सम्प्रदायवाद की समस्या मूलतः हिन्दू मुस्लिम विभेद की समस्या थी जिसे ब्रिटिश शासकों ने प्रोत्साहित किया। खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने कहा है कि हिन्दू मुस्लिम संघर्ष धार्मिक नहीं बल्कि आर्थिक था। लेकिन ब्रिटिश अनुदारवादियों ने इसे 'प्रतिनिधित्व की समस्या' के रूप में ही देखा हो ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों को पृथक राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जो आगे चलकर राजनीतिक पृथक्करण का कारण बन गया।

मुस्लिम सम्प्रदाय के प्रति ब्रिटिश सरकार का रुख (Attitude of the British Government towards the Muslim Community)

विरोधी रुख :— चूँकि अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भारत में मुसलमानों का शासन था, इस लिए अंग्रेज शासकों से उनका विद्वेष स्वाभाविक था। अंग्रेजों ने मुसलमानों को शासन से हटाया था इसलिए मुसलमान उन्हें विरोधी की दृष्टि से देखते थे तथा अंग्रेजों द्वारा भी उन्हें शत्रु समझा जाना स्वाभाविक था। अतः अंग्रेजों ने हर संभव उपाय से मुसलमानों का दमन करने का निश्चय किया और हिन्दुओं का पक्ष लेना शुरू किया। और अंग्रेजों ने जान बूझकर ऐसी नीति अपनायी जिससे मुसलमानों की आर्थिक अवस्था हीन हो, उनकी प्रतिभा को आघात पहुँचे तथा उनका पूर्णतया पतन संभव हो।

1857 के गदर के बाद मुसलमानों के प्रति अंग्रेजों का रुख और भी कड़ा हो गया चूँकि गदर में मुसलमानों का प्रमुख रोल था, इसलिए उनको दबाने की नीति का ब्रिटिश सरकार ने जोरदार पालन किया। मुसलमानों को सरकारी पदों से अलग तथा सेना का पुनर्गठन धर्म और जाति के आधार पर किया गया तथा उच्च पदों से मुसलमानों को वंचित कर दिया गया। अंग्रेजी के माध्यम से पश्चिमी शिक्षा शुरू की गयी जिसे हिन्दुओं ने अपनाया किन्तु मुसलमानों ने उसका बहिष्कार किया जिसके कारण मुसलमान शैक्षणिक तथा सामाजिक रूप से पिछड़ गया। अरबी, फारसी के स्थान पर अँगरेजी अदालती भाषा हो गई। जिससे बौद्धिक अवसाद तथा राजनीतिक चेतना का विकास रुक गया। ब्रिटिश शासन की स्थापना के पूर्व शासन के सभी महत्वपूर्ण पदों पर मुसलमान पदासीन थे और सेना में भी वर्चस्व था। लेकिन अब स्थिति उल्टी हो गई। सेना तथा सेना के उच्च पदों पर हिन्दुओं की भरमार हो गई और मुसलमानों की संख्या नगण्य हो गयी। अतः उनकी आर्थिक दशा बहुत बिगड़ गई। जिससे क्षुब्ध होकर मुसलमानों ने ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन शुरू किया। वहाबी आन्दोलन इसी का परिणाम है।

अंग्रेजों के रुख में परिवर्तन :— मुसलमान इतना कमजोर हो चुके थे कि ब्रिटिश साम्राज्य को कोई खतरा नहीं रह गया था, बल्कि अब उनसे मित्रता स्थापित करने में अंग्रेजों को फायदा था। दूसरी ओर नए राष्ट्रवाद के जागरण से अंग्रेजों को खतरा बढ़ते जा रहा था इसलिए 'फूट डालो शासन करो' कि नीति अपनाकर मुसलमानों के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाकर उनकी स्थिति पहले की तुलना में मजबूत होती जा रही थी। मुस्लिम राजनीति में सर सैयद अहमद खाँ ने पदार्पण किया और द्वि राष्ट्र सिद्धांत (Two Nation Theory)

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

प्रतिपादन किया और भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता का बिष घोल दिया। इसके बाद अंग्रेजो का मुसलमानों के प्रति सहानुभूति तथा हिन्दुओं के प्रति विरोधी रुख अंत तक बना रहा।

मुस्लिम साम्प्रदायिकता के जन्म के कारण :- 19वीं शदी के अन्तिम चरण में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के उदय के कारण निम्नलिखित है।

(i) मुसलमानों की अधोगति तथा उनमें असंतोष की भावना :- अंग्रेजों के आगमन ने अपना प्रबल दुश्मन मुसलमानों को समझा क्योंकि उनके पहले भारत पर मुगलों का ही आधिपत्य था। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से मुसलमानों की भावना को कुचल दिया। मुसलमान हताश और निराश हो गया जिसके कारण मुसलमानों को अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष पैदा हो गया। फलस्वरूप उनमें राजनीतिक जागरूकता तथा विद्रोह की भावना का उदय होने लगा।

(ii) बहावी आन्दोलन :- हिन्दू समाज में ब्रह्म समाज, आर्य समाज इत्यादि धर्म सुधार आन्दोलन हिन्दुओं के लुप्त गौरव को जगाने का काम किया जिसका प्रभाव इस्लाम पर भी पड़ा। इस्लाम की इस्लामी कमजोरियों को दूर करने उसमें स्फूर्ति तथा जागृति लाने के लिए बहावी आन्दोलन का शुरुआत किया। मूल रूप से बहावी आन्दोलन की शुरुआत 18वीं शदी के उत्तरार्द्ध में अरब में हुआ। इस आन्दोलन का बहावा भारत में सैयद अहमद बरेलवी के द्वारा हुआ। आरंभ में बहावीवाद ने सिखों और अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद का रूप धारण कर लिया, लेकिन अंग्रेज ने निर्दयता पूर्वक इसे कुचल दिया लेकिन इस आन्दोलन ने मुसलमानों में जिस धार्मिक तथा राजनीतिक चेतना को जगाया उसे अंग्रेज दबा नहीं सकी। इस प्रकार बहावी आन्दोलन आधुनिक मुसलमानों में कट्टरता की भावना पैदा हो गई। भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा आन्दोलन था।

(iii) हिंदू धार्मिक आन्दोलन का प्रभाव :- 19वीं शदी के हिन्दू धार्मिक आन्दोलन ने बहावी आन्दोलन को प्रश्रय दिया और मुसलमानों को संगठित भी कर दिया। हिन्दू नव जागरण के प्रतिक्रिया स्वरूप मुसलमानों में भी धार्मिक जागृति की भावना आई। राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कर रूढ़िवादिता एवं वाह्य आडम्बर का खण्डन किया। स्वामी विवेकानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर शुद्धि का कार्यक्रम अपनाया, तिलक के शिवाजी समारोह एवं गणपति महोत्सव से मुसलमानों में भी जागृति तथा एकता की भावना जोर पकड़ने लगा।

(iv) अंग्रेजी नीति में परिवर्तन :- ब्रिटिश शासन के प्रारंभिक दिनों में अंग्रेजों ने मुसलमान विरोधी नीति अपनायी। मुसलमानों को साम्राज्य के शत्रु और हिन्दुओं को मित्र माना। जिससे मुसलमानों की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पतन होने लगा लेकिन हिन्दू राष्ट्रवाद का उदय होते ही अंग्रेजों ने अपनी नीति में परिवर्तन करना शुरू किया और मुसलमानों से गठबंधन शुरू कर उनको प्रोत्साहित करना शुरू किया।

(v) फुट डालो और शासन करो की नीति :- मुस्लिम साम्प्रदायिकता ब्रिटिश शासन की देन थी। ब्रिटिश शासकों ने फुट डालो और शासन करो की नीति हिन्दुओं तथा मुसलमानों में अपनाकर नव जागरित राष्ट्रवाद के मार्ग में बाधा पहुँचाना शुरू किया। भारत के दो बड़े धार्मिक सम्प्रदायों हिन्दु और मुसलमानों को विभाजित कर शासन करने का निश्चय किया।

(vi) बंगाल का विभाजन :- लार्ड कर्जन की कुटिल नीति ने हिन्दु मुस्लिम भेदभाव को बढ़ावा दिया। मुस्लिम सम्प्रदाय को उभारने हेतु तथा दोनों सम्प्रदायों में संघर्ष बढ़ाने के लिए उसने बंगाल विभाजन की योजना बनाई। उसने मुसलमानों से कहा कि बंग विभाजन की योजना को मुसलमानों के लाभ के लिए बनाया गया है। मुसलमानों को विश्वास हो गया कि उनके और हिन्दुओं के हित में कोई मेल नहीं है। अतः मुसलमान हिन्दुओं से अलग होने लगे और राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग करना बन्द कर दिया।

(vii) पृथक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना :- भारत में नव जागरण के परिणामस्वरूप विभिन्न सम्प्रदायों एवं जातियों के लोग अपनी पृथक शिक्षण संस्थाएँ खोलने लगे। 1875 ई० में मुसलमानों ने एँग्लो ओरियंटल कालेज की स्थापना की। धार्मिक आधार पर ही अन्य सम्प्रदायों ने दयानन्द एँग्लो वैदिक कालेज, सनातन धर्म कालेज, खालसा कालेज तथा क्रिश्चियन कालेज की स्थापना की। मुसलमानों ने देवबंद में अपना दारूल-उलूम खोला। आर्य समाजियों ने गुरुकुल स्थापित किए और सनातनियों ने ऋषिकुलों की नींव डाली। धार्मिक आधार पर ही अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय और बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय का सूत्रपात हुआ। इस प्रकार इसी तरह एक दूसरे के बीच दूरी बढ़ता गया।

(viii) अलीगढ़ आन्दोलन :- भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिक राजनीति के जन्मदाता सर सैयद अहमद को माना जाता है। मुसलमानों में नव जागरण का संचार करने के लिए अहमद खाँ ने अलीगढ़ आन्दोलन की नींव रखी। अलीगढ़ में मोहम्मडन एँग्लो ओरियंटल कालेज (M.A.O. College) की स्थापना की जो आगे चलकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गया। यही पर आधुनिक विचारधारा के मुसलमानों ने शिक्षा ग्रहण की और आगे चलकर अलीगढ़ एक नए आन्दोलन का केन्द्र बन गया।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः मुस्लिम सम्प्रदाय में काफी उतार-चढ़ाव के बीच अंग्रेजों द्वारा 'फुट डालो और शासन करो' कि नीति के आधार पर अंग्रेजों से सहानुभूति स्वरूप किसी एक का स्थायी वर्चस्व और उभरते राष्ट्रवाद को रोकने के लिए बंगाल विभाजन की नीति पर, कि राष्ट्र पहचान के आधार पर देश के विभाजन के लिए चिंगारी आग के रूप में बदल गया। मुसलमानों का हौसला बढ़ते गया और यह देश के विभाजन के बाद ही शांत हुआ।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमरॉव
दिनांक 10/08/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA